कश्मीर के संत कवि शेख नूरुद्धीन के काव्य में लोकमंगल अवधारणा

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

सारांश- कश्मीर पौराणिक महत्त्व और अनंत रोमांस का देश है | यह सही अर्थो में शुद्ध, स्वच्छ और भव्य चित्र प्रस्तुत करता है, जहाँ पृथ्वी एक परी-भूमि और स्वर्ग है | इस मनमोहक सौन्दर्य और लुभावन जलवायु को अनंत आशीर्वाद है | प्रभावशाली परिदृश्य, विशाल झीलों और नदियों, बर्फ से ढकी पहाड़ियों, धन्य प्रकृति के बीच भगवान ने मानवों के कल्याण के लिए समय-समय पर अवतार भेजे है, जो इंसानों को गुमराही के अंधियारों से निकालकर रोशनी के मीनारों और सत्यमार्ग पर लाते है | जहाँ तक कश्मीर घाटी का सम्बंध है, इसे (पिर वअरी, रशि वअरी) के नाम से जाना जाता है, वो इसलिए कि यहाँ बड़े-बड़े साधुओं, संतो, ऋषियों और महात्माओं ने जन्म लिया है | जिनमें सईद बुलबुल शाह, सईद अली हमदानी, हज़रत शेख नुरुद्दीन नुरानी, ललदेद, हब्बा खातून इत्यादि | इन सभी महात्माओं में हज़रत शेख नुरुद्दीन नुरानी का विशेष स्थान है, जिन्हें 'नुन्दऋषि' के नाम से जाना जाता है |

बीज शब्द- लोकमंगल, हिन्दू-मुस्लिम एकता, सदाचार, शांति |

नुन्दऋषि कश्मीरी ऋषि-संप्रदाय के प्रवर्तक संत कवि हुए हैं | ऋषि-संप्रदाय का कश्मीर की धार्मिक संरचना के विकास-क्रम में महत्वपूर्ण स्थान रहा है | 'ऋषि' मूलतः संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है- मन्त्रद्रष्ट, वेदमंत्रों का साक्षात्कार और प्रकाशन करने वाला, बहुत बड़ा तपस्वी, मुनि आदि |[1] इस संप्रदाय के अनुयायी प्रायः विवस्त्र रहते हैं, घर-ग्रहस्थी से मुख मोड़ लेते हैं, एकांतप्रिय होते है तथा अत्यधिक भावुक होने के कारण कवितायें भी लिखते हैं | कश्मीर में ऋषि संप्रदाय का अविर्भाव 14वीं शताब्दी से माना जाता है | इस संप्रदाय का इस्लाम धर्म को मानने वालों पर विशेष प्रभाव है |

एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक और नैतिक कवि के रूप में नुन्दऋषि ने कदम-कदम पर लोगों का प्रतिनिधित्व किया है | उनका मानना है कि मनुष्य को अपने को महत्व न देकर, बिना अहंकार के, कुकर्मों को छोड़कर सत्कर्मों की संगति द्वारा अपनी वासना-तृष्णा पर नियंत्रण करना चाहिए, संयमी बनकर एकांत में ईश-स्मरण तथा व्यर्थ के कार्यों से दूर रहकर अपने- पराये को एक दृष्टि से देखना चाहिए | ये दिव्य-ज्योति के अमर प्रकाश से लोगों के मन में निहित अंधरों को दूर भगाना चाहते थे | विनम्रता, दया, करुणा, सहानुभूति, साम्प्रदायक सद्भाव आदि इनके स्वाभाविक गुण थे | उन्होंने जन-साधारण के लिए रास्तों में फलदार व्रक्ष लगवाए | वन-व्रक्षों की रक्षा करना उन्हें अभीष्ट था | जम्मू-कश्मीर के सरकार ने उनके कथन **"अन्न पोशिय तेलि, येलि वन पोशिय"** अर्थात जंगल हैं तो अन्न है, को 'मोटो' बनाकर जगह-जगह पर सुन्दर बोर्ड लगवाए |

नुन्दऋषि सीखे हुए अर्थात् पढ़े-लिखे हुए व्यक्ति नहीं थे लेकिन फिर भी एक महान वैज्ञानिक, जीवन के अस्तित्व के बारे में अनंत ज्ञान रखने वाले व्यक्ति थे | उन्हें जो कुछ भी हासिल था वो उनके अच्छे कर्मो, ईमानदारी, और भगवान के लिए प्रेम का परिणाम था | वे इस मिट्टी का एक ऐसा अकेला बेटा है, जिसकी कविता प्यार और सौन्दर्य पर आधारित न होकर समाज पर आधारित है | कश्मीर घाटी में सदैव ही विकट-संकट का वातावरण रहा है | क्षेत्रीयवाद, हिंसा, अमानवीयता का विरोध करते हुए शेख नुरुद्दीन नुरानी ने हिन्दू-मुसलमानों अतः सभी धर्मो के लोगों को मिल-जुलकर रहने की आवाज़ इस प्रकार दी है–

"सअरी समितव तह अकिस्स्य रज़्ज़ी लमितव

अध्ह मालि मह रविहा कहन गाव |"[2]

अर्थात् यदि हम एक हो जाते तो किसी की क्या मजाल कि हमें अलग करता |

नुन्दऋषि केवल इस्लाम के एक उपदेशक ही नहीं बल्कि वे एक कवि, दार्शनिक और वैज्ञानिक भी थे | वे केवल मुसलमानों द्वारा ही अत्यधिक श्रद्देय नहीं है, बल्कि सभी धर्मो के लागों ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्शवादी माना है | इनकी कविता मानव जाति के लिए एक स्पष्ट सन्देश है जहाँ ऊँच-नीच, भेद-भाव का कोई स्थान नहीं | नुन्दरेशी की कविता में एकता की भावना सर्वोपरि है | विशेष रूप से उन्होंने हिन्दुओं-मुसलमानों को एक होने की बात का वर्णन इस प्रकार किया है-

"बडीथ क्रय करिथ नह ह्कान्य

पत्तह नुन्द क्य धम ध्यान्य

सुल्ली कौनः करुथ ज्ञान्ह

असल हियौंध मुसल्मान्ह्य |"[3]

अर्थात् बूढ़े होके क्या कर पाओगे फिर नुन्द (नुन्दऋषि) क्या बोल पायेगा इसलिए इससे पहले तुम बूढ़े हो जाओगे और कोई काम करने योग्य न रह पाओगे, हिन्दू-मुस्लमान एक है– इस बात का ज्ञान करो |

नुन्दऋषि कहते है- **अकुय खोदा नाव लछा, जिकिरि रोस कांह कछा मो.**[4] अर्थात् खुदा एक है परन्तु उसके नाम लाखों में है तथा जिक्र (स्मरण) के बिना उसकी प्राप्ति असंभव है | उन्होंने कहा 'नफ़स' ही प्राणी का पतन कर देता है- **"नफ्सन करनम अदल तः बदल, नफ्सन करनम ज़दल छेय"**[5] इस प्रकार नुन्दऋषि जीवन के प्रत्येक स्तर पर मानवहित, शांति तथा भाईचारे की कमाना करते हैं | इनका मानना है कि

हिन्दू और मुसलमान एक ही माता-पिता की संताने है- **अकिस मालिस माजि अन्दुयन, तिमन दय त्राविथ न क्याहा**.[6] अर्थात् एक ही माता–पिता की संतान इन्हें आपस में वैर करने से क्या लाभ होगा|

शेख नुरुद्दीन नुरानी ने इस प्रकार की रहस्यवादी कविता रची है जिसके कारण वे सभी संतो के संरक्षक और कश्मीर की संस्कृति का प्रतीक बन गए है | उनके छन्द कल्याण, उत्थान, समानता और मानवता की बात करते है | नुन्दऋषि की कविता में जहाँ मानव-धर्म का बोल- बाला है, वही भविष्य में मानव धर्म के विघटन की घोषणा इन पंक्तियों में की हैं-

"नसर बाबा बौज़सा गौर संज वतन

सौर सिंज व्डी आसि मौर सिंज ताज

लूख पत- पत पक्न्य दुनिया चोरन

सु मालि आस्य वांदर राज."[7]

अर्थात् हे नसर बाबा (नुन्दऋषि के शिष्य) सुनो अपने गुरु की बात, बन्दर के सर पर मोर का ताज होगा और लोग चोरों के पीछे चलेंगे, वह राज बंदरों का राज होगा |

निष्कर्ष यह है कि नुन्दऋषि की कविता मानव-हित के पथ को लिए हुए है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति प्रेम, भाईचारे और शांति की कामना कर सकता है | विशेष रूप से उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के धर्म के वास्तविक स्वरूप से अवगत कराया है, इनके कहे गये श्रुकों में वैर के स्थान पर प्रेम है, उग्रता के स्थान पर सौम्यता, आतंक के स्थान पर शांति है |

संदर्भ ग्रन्थ-

1 श्रीवास्तव, मुकुन्दी लाल. सन् 1916, *ज्ञान शब्द-कोश*, काशी विद्यापीठ, काशी पृ. 926

2 बक्श, कादिर. सन् 1959 *नूरनामा*, पोर्ट ऑफ़ स्पेन, कादिर बक्श इस्लामिक सर्विस, पृ. 194

3 वही, पृ. 147

4 कामिल, मोहम्मद अमीन. सन् 1998, *नूरनामा*, शेख-उल-आलम चेयर, दरगाह हजरतबल, श्रीनगर पृ. 42,

5 वही, पृ. 84

6 वही, पृ. 48

7 वही, पृ. 135

-डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर

mudasirhindi@gmail.com

9682593408